मुद्रक तथा प्रकाशक
घनश्यामदास
गीताप्रेस, गोरखपुर

मूल्य दो पैसे

प्रथम संस्करण 5250 } सं० १९८७ { पता— गीताप्रेस, गोरखपुर।

श्रीहरिः

निवेदन

इस अनुवादके लिये मैं इन मन्त्रोंके गुजराती अनुवादक स्वर्गीय भाई श्रीहरिलाल माणेकलाल देसाई बी० ए० और उनकी सहधर्मिणी श्रीमती कुसुम बहन देसाईका विशेष आभारी हूँ, जिनके सौजन्यसे मैं इनको पाठकोंको भेंट करनेमें समर्थ हो सका।

काशीनाथ नारायण त्रिवेदी

समर्पण

पूज्य पिताजी

को

जिनके सेवा-परायण जीवनसे मुझे

सदा प्रेरणा मिलती रहती है

और

स्व० भाई सदाशिव जोशी

को

जो सेवाकी बड़ी बड़ी आशाएं अधूरी ही

छोड़कर चले गये।

बिनीत,

काशीनाथ

सेवाके मन्त्र



गर तुम चाहते हो कि तुम जो सेवा करो वह लोकोपयोगी होते हुए भी तुम्हारे लिये हानिकर न हो तो तुम अपने सेवा-धर्मके लिये नीचे लिखे तीन सिद्धान्त स्थिर करलो—

(१) 'सेवा-धर्मको स्वीकार करना ही सर्वोत्तम आनन्द है।'

(२) 'याद रक्खो कि तुमसे कहीं अधिक बलवान् शक्ति तुम्हें सेवाके लिये सक्षम बनाती है; तुम तो उसके प्रतिनिधिमात्र हो।'

(३) 'यह कभी न भूलो कि जो दैवी अंश तुममें है, वही दूसरोंमें भी है।'

'यह याद रखना कि तुम दूसरोंके सम्बन्धमें जो बातें कहते या उनके बारेमें जो विचार करते हो, सम्भव है दूसरोंने भी वही बातें या वैसे ही विचार तुम्हारे लिये भी कभी किये हों।'

'जब कभी कोई तुम्हें कष्ट पहुँचावे, तो याद रखना कि कष्ट पानेवालेकी अपेक्षा कष्ट देनेवालेको ही उससे अधिक दुःख सहना पड़ता है।'

'इस बातकी चिन्ता रखना कि किसी व्यक्तिके प्रति तुम्हारे प्रेमके कारण, तुम्हारे या उस व्यक्तिके मनकी समतोलना नष्ट न हो। तुम्हारी सेवासे शक्तिमें वृद्धि होनी चाहिये। शक्तिका ह्रास होना अच्छा नहीं।'

'दूसरोंमें सेवा करनेकी अधिक क्षमता देखकर ईर्षा न करना। हाँ, यह महसूस कर खुश ज़रूर होना कि जहाँ तुम्हारी अल्प शक्ति सेवाके लिये

असमर्थ हो जाती है, वहाँ तुम्हारी मददके लिये तुमसे अधिक बलवान् शक्तियाँ भी मौजूद हैं।'

'जब तुम किसीको कोई चीज़ अर्पण करो तो यह आशा कदापि मत रक्खो कि वह उस चीज़को सदा-सर्वदा अपने ही पास रक्खे रहे। जब तुम देखो कि जिस भेंटसे उस मनुष्यको सुख हुआ है, वही दूसरोंको भी सुखी कर सकती है, तो खुशी मनाओ।'

'जब तुम किसीकी मदद करते हो तब जिस हेतुको लेकर तुम्हारे हृदयमें सेवाकी प्रेरणा होती है, उस हेतुमें तल्लीन हो जाओ। इस तरह करनेसे तुम्हारा उद्देश्य सफल होगा। तुम अधिक सुन्दर सहायता कर सकोगे।'

'सेवाके बदलेकी आशा मत रखना; तुम जिसकी मदद करो अगर वह तुम्हें धन्यवाद न

दे, तो भी बुरा न मानना। यह याद रखना कि तुमने जो सेवा की है, वह शरीरकी नहीं बल्कि आत्माकी की है। ओठ भले ही न हिलें, तुम आत्माकी उपकार-प्रियताका दर्शन अवश्य ही कर सकोगे।'

'जिसपर तुम प्रेम करते हो, बदलेमें उसके प्रेमकी आशा या चेष्टा कदापि न करना। अगर तुम्हारा प्रेम पवित्र और सच्चा होगा तो अवेर-सवेर उसके हृदयमें वह प्रवेश करेगा और वहाँसे तुम्हें उसका प्रत्युत्तर भी मिलेगा; अगर तुम्हारे स्नेहका सोता सीमित है, तो यह इष्ट है कि वह प्राणी किसी दिन इस विचारसे दुखी न हो कि आखिरकार वह सूख गया है।'

'याद रखना कि जिस आदमीने आत्म-संयमकी साधना नहीं की है, वह सच्ची सेवा नहीं कर सकता।'

'जो सेवा बोझा उठा लेनेके बदले बोझ-वहन करनेकी शक्ति देकर बोझको हलका करती है वही सच्ची सेवा है ।'

'अगर तुम भिन्न-भिन्न व्यक्तियोंके भिन्न-भिन्न आदर्शोंपर दृष्टि रखकर तदनुसार सेवा करोगे तो उत्तम सेवा कर सकोगे ।'

'मनुष्यमें जो सर्वोत्तम गुण होता है, उसीके ज़रिये वह सर्वोत्तम सेवा कर सकता है । संसारमें जितने मनुष्य आश्रयके पात्र हैं, उतने ही सेवाके भी पात्र हैं ।'

'प्रत्येक पल सेवा करनेका समय होता है । क्योंकि यद्यपि सदा ही प्रेमभरे कार्य करनेके अवसर जीवनमें नहीं मिलते, तो भी हृदयको सदा प्रेमसे भरपूर रखनेका समय तो हमेशा ही मनुष्यके लिये प्रस्तुत रहता है ।'

'मनुष्य जिस हदतक अपने स्वार्थका कम चिन्तन करता है, उस हद तक वह अवश्य ही अपनी आत्मोन्नतिकी ओर ध्यान लगा सकता है। सेवाके प्रत्येक छोटे-से-छोटे कार्यका बदला सेवाकी बढ़ती हुई शक्तिके रूपमें सेवकको वापस मिलता है।'

'किसी मनुष्यकी सेवा करनेके लिये तुमने जो मार्ग ग्रहण किया है, यदि वह उस मनुष्यको पसन्द न हो तो तुम कोई दूसरा मार्ग सोच लो। तुम्हारा हेतु सेवा है, जबर्दस्ती उसपर अपनी सेवाका ढंग लादना ठीक नहीं।'

'किसी आदमीसे तुम्हारी जान-पहचान हो या न हो, संकटके मौकेपर उसकी सहायता करनेसे कभी न चूको। अपने संकटके कारण वह तुम्हारे भाईके समान है। प्रतिष्ठाके कारण

पैदा होनेवाली झिझक गर्वका एक स्वरूप है, जिसकी वजहसे संकटके समय दुखी आदमीका एक सहायक कम हो जाता है।'

'कदापि अपने मनमें यह न सोचो कि आज मैंने दूसरोंकी बहुत मदद की है। हाँ, अपने दिलको टटोलकर ज़रा देख लो कि तुम इससे भी ज्यादा मदद कर सकते थे या नहीं, और ज़रा इसपर भी सोचो कि दुनियाके दुःख-भण्डारको कम करनेमें तुम्हारी मदद कितनी थोड़ी रही है।'

'महान् नेताओंके जो सच्चे अनुयायी होते हैं, वही अपनेसे कम ज्ञानवालोंकी बराबर रहनुमाई कर सकते हैं। क्योंकि जिस मनुष्यको आज्ञापालनकी तमीज़ नहीं है, वह ठीकसे आज्ञा कर भी नहीं सकता।'

'अपनी सीखके मुताबिक आचरण करनेकी मनोवृत्ति दूसरोंमें पैदा करनेका अच्छे-से-अच्छा रास्ता यह है कि तुम खुद अपनी सीखके अनुसार आचरण करो।'

'तुम यह चाहते हो कि लोग तुम्हारे हेतुको शुभ समझें, तो तुम्हारा भी यह कर्तव्य है कि तुम दूसरोंके कार्योंको शुभ हेतुद्वारा प्रेरित ही समझो।'

'अपमानका मूल हलके स्वभावमें है, उन्नतिशील स्वभावपर उसका असर नहीं पड़ सकता। अतएव मनुष्यका अपमान तभी होता है, जब वह अपने ऊँचे पदको छोड़कर अपमान पाने योग्य निचाईतक आ पहुँचता है।'

'दूसरे मनुष्य सेवाधर्मकी शिक्षा नहीं ले रहे हैं, और तुम उस शिक्षासे शिक्षित हो रहे हो,

इसलिये औरोंकी अपेक्षा तुम अच्छे हो, यह विचार जब तुम्हारे दिलमें उठे तब याद रक्खो कि जिस क्षण तुम्हारे दिलमें ऐसे विचार पैदा होते हैं, उसी क्षण तुम सेवाधर्मका त्याग करते हो ।'

'अपने जीवनकी उच्चतामें दूसरोंको हिस्सेदार बनाना, सच्ची सेवाका लक्षण है। लेकिन प्रत्यक्ष या परोक्ष, किसी भी रूपमें, अपने आपको प्रशंसनीय उदाहरणके तौरपर पेश करना, सच्ची सेवा नहीं ।'

'पहले कहना और बादमें करना, इसकी अपेक्षा पहले करना और फिर कहना अधिक अच्छा है, लेकिन सबसे अच्छा तो काम करके चुप रहना ही है ।'

'मनुष्य कितनी सेवा कर सकता है, इसका सच्चा अन्दाज़, उसके रात-दिनके गृहजीवनसे लगाया जा सकता है। उसकी रचनाओं–पुस्तकों, लोगोंमें उसकी प्रतिष्ठा, उसके सार्वजनिक भाषणों और कार्योंसे इस बातका ठीक-ठीक पता नहीं लगाया जा सकता। खुले तौरपर बड़े-बड़े काम करनेसे कोई आदमी बड़ा या महान् हो जाता है, यह समझना भूल है। आत्मसंयमके छोटे-मोटे कामोंमें, जिनका किसीको पता भी नहीं रहता, मनुष्यकी महत्ता छिपी रहती है।'

'जो अपनी तमाम शक्तिका विनियोग सेवामें कर देना चाहता है, उसे अवसर पड़नेपर जब सेवा करनेका सौभाग्य प्राप्त हो, तब अपने सर्वस्व-त्यागकी तैयारी कर रखनी चाहिये।'

'एक मनुष्य कई तरहसे तुम्हारी सहायता चाहता है, अब तुम उसकी अच्छी-से-अच्छी सेवा उसकी मनचाही चीज़ें देकर नहीं, वरं उसके लिये जो चीज़ ज़रूरी हो, वह देकर कर सकते हो। ऐसा करनेसे तुम्हारी सेवा एक विशेष प्रकारकी हो जाती है, और सम्भव है कि इसके कारण वह तुमसे नाराज़ भी हो जाय। तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम उसकी सेवा ऐसे ढंगसे करो कि वह स्वीकार्य हो पड़े।'

'जिस सहायताका पात्र एक ख़ास आदमी है, उसे वह सहायता न देकर किसी दूसरेको देना, सच्ची सेवा नहीं है। मनुष्य किसी भी तरह क्यों न हो, सेवा करना चाहते हैं। लेकिन वे उचित मार्गका त्यागकर और जिसकी सेवा करनी चाहिये, उसे भुलाकर, जिसकी सेवा करना चाहते हैं, उसकी सेवा करते हैं।'

'जिस दिनका काम अधिक अच्छा हो, उस दिनको अपने लिये अधिक उज्ज्वल समझो।'

'दुनियामें एक भी ऐसा आदमी नहीं है, जिसमें कुछ-न-कुछ त्रुटि न हो, साथ ही ऐसा आदमी भी मिलना मुश्किल है, जो कुछ न दे सकता हो; मतलब, जिसमें एक भी गुण न हो।'

'जब तुम किसीकी सेवा करो, तब उसकी कमजोरियाँ देखकर उकता न जाओ। कमजोरीके कारण ही तुमको उसकी सेवा करनेका अवसर मिलता है। अगर उसमें त्रुटियाँ न होतीं तो तुम्हारी सेवाकी भी उसे ज़रूरत न रहती।'

'जैसे हर-एक दुखमें भावी सुखके स्वप्न छिपे रहते हैं, वैसे ही हृदयकी प्रत्येक कमजोरी एक दिन सद्गुणोंमें विलीन हो जाती है।'

'जब किसी आदमीकी सहायता करो, तब याद रखना कि उसके अवगुणोंको बढ़ानेवाली शक्ति, तुम्हारी सहायतासे भविष्यमें सद्गुणोंकी पोषक हो सके। शक्तिको बदलना तुम्हारा काम नहीं है, उसके स्वरूप और उसकी दिशाको बदलना ही तुम्हारा कर्तव्य है।'

'अगर मेरे पास बहुतेरे साधन होते तो मैं कितनी ज्यादा सेवा कर सका होता,--इस उधेड़-बुनमें पड़नेकी अपेक्षा जो साधन आज तुम्हारे पास मौजूद हैं, उनके द्वारा की गयी ज़रा-सी भी मदद कहीं क़ीमती है।'

'सामनेवाले आदमीमें जिस सद्गुणकी कमी है, उस सद्गुणके प्रत्यक्ष दर्शन उसे अपने व्यवहार-द्वारा करा देना ही उसकी बड़ी-से-बड़ी सेवा है।'

'तुम रात-दिन दूसरोंकी जो सेवा किया करते हो, उसकी कीमत आँकनेका सीधा, सरल और सच्चा रास्ता यह देख लेनेमें है कि आया, तुम्हारे जीवनमें उसके कारण अधिक शान्ति, अधिक सन्तोष और अधिक उदार-चारित्र्यका प्रवेश हुआ है या नहीं।'

'तुम्हारी शक्ति भर तमाम सेवाओंकी आशा दुनिया तुमसे रखती है। जो दूसरोंकी शक्तिका विषय है, उसकी तुमसे आशा नहीं की जाती। अगर तुम अपनी शक्तिभर सब कुछ करते रहे तो तुम समझ लो कि तुमने अपने कर्तव्यका ठीक-ठीक पालन किया है।'

'अगर कोई तुम्हारी सेवा मंजूर करनेसे इनकार करे तो इसी कारण तुम उसकी सेवासे मुँह न मोड़ो। जो मनुष्य सेवाका अनादर

करता है, आखिर उसीको अधिक सेवाकी आवश्यकता होती है।'

'कोई प्रेमवश तुम्हारी सेवा करना चाहे तो उसे मना करते समय इतना अवश्य ध्यानमें रखना कि प्रेमपूर्वक मदद करनेसे जितनी सेवा होती है, उतनी ही सेवा प्रेमपूर्वक मदद स्वीकार करनेसे भी होती है।'

'अपने वसभर बुद्धिमानी और सचाईके साथ सेवा कर चुकनेपर उसके परिणामकी चिन्ता कभी न करना; क्योंकि सेवाकी निर्मलता सेवकको शान्तिके रूपमें वापस मिलती है और जिसकी सेवा की गयी है वह सुखपूर्ण वातावरणमें रहने लगता है।'

'सेवाका सर्वोत्तम बदला, हृदयको अधिक प्रेममय बनानेकी शक्ति और उसके द्वारा अधिकाधिक सेवा करनेकी शक्तिमें ही है।'

'जिस मनुष्यका हृदय सुखका अनुभव नहीं करता, वह सच्ची सेवा भी नहीं कर सकता।'

'अगर किसी मनुष्यकी तुमने विशुद्ध प्रेमपूर्वक सेवा की है, तो तुम्हारी सेवामें विवेक-बुद्धिकी कमी रहनेपर भी, जिसकी तुमने सेवा की है, उसे अन्तमें कोई नुकसान नहीं होगा। तुम्हारे प्रेमकी शक्ति तुम्हारे विवेककी कमीसे होनेवाली हानिसे उस मनुष्यको बचा लेगी।'

'जिस कमजोरी या त्रुटिके लिये तुमसे क्षमा माँगी जाती है, वह कमज़ोरी या त्रुटि भविष्यमें उस मनुष्यमें न दिखाई पड़े, ऐसे रास्तेमें उसे लगाकर स्नेहपूर्वक और आतुरताके साथ उसके लिये प्रयत्न करना ही, सच्ची क्षमा है।'

'कभी-कभी हमें कर्तव्यवश दूसरोंके कामोंका

फैसला देना पड़ता है, लेकिन दूसरोंकी मदद करना तो हमारा रातदिनका कर्तव्य है ।'

'अगर तुमको अपनी आध्यात्मिक प्रगतिकी थाह लेनी है तो तुम इतना देख लो कि पहले जितने सेवाके अवसरोंको तुम हाथसे जाने देते थे, आज भी उतने ही जाने देते हो, या कम ।'

'जब तुम किसीके सेवा करनेके तरीक़ेकी टीका करते हो, तब तुम यह भूल जाते हो कि वह मनुष्य एक ऐसे आदमीकी सेवा करता है, जिसे तुम्हारे सेवा करनेके ढंगसे ज़रा भी प्रेम नहीं है ।'

'तुम्हें सेवा करनेकी प्रेरणा क्यों हुई, किस तरह हुई, लोगोंको यह बताते हुए ज़रा भी हिचकिचाना मत । अपने सुखका मूल जगत्को अर्पण करना, जगत्को सुन्दर उपहार देना है ।'

'किसी आदमीके लिये किया गया सेवाका हर-एक काम उस आदमीको उत्तेजन देनेवाला और उसकी रक्षा करनेवाला देवदूत-सा बन जाता है। तुम्हारी सेवा जितनी अधिक स्नेह-पूर्ण होगी, दूत उतना ही दीर्घायु बनेगा और वह अधिक समय तक उसे प्रोत्साहित कर सकेगा, उसका रक्षक बन सकेगा।'

'कहीं यह न मान बैठना कि जिसे हम अपनी आँखों सेवा करते हुए देखते हैं, वही सेवा करता है। सेवाके महान् कार्योंमें कुछ ऐसे भी होते हैं, जिनका किसीको पतातक नहीं रहता।'

'सेवाका कोई काम आज ही करनेके बदले अगर कलपर उसे टाल देते हो तो

सम्भव है, सेवाका वह अवसर फिर कभी प्राप्त ही न हो; क्योंकि कल उस कार्यकी ज़रूरत न रहे, और आज, जब ज़रूरत थी, तब वह किया नहीं गया।'

'हमारे पास आनेवाले हर-एक व्यक्तिका उचित खयाल रखनेसे जो सेवा होती है, अकसर देखा जाता है कि हम उसकी उपेक्षा करते हैं। मनुष्य जो कहना चाहता है, उसे ध्यानपूर्वक सुन लेनेमें ही उसकी आधी सेवा हो जाती है।'

'जब तुम्हें दुःख सहना पड़े, तब याद रखना कि दुःख सहन करनेसे दूसरोंके दुःखमें सहानुभूति रखनेकी तुम्हारी शक्तिमें वृद्धि होती है। क्योंकि अगर तुमने किसी तरहका कष्ट सहन किया है, तो अधिक नहीं तो

जितना कष्ट तुमने सहा है, उतने अंशमें अवश्य ही तुम दूसरोंके साथ अधिक सहानुभूति प्रकट कर सकोगे, जो तुम्हारे ही समान दुःखी हैं।'

'सेवाके इच्छुकको एक ही तत्त्वके दो जुदा स्वरूपोंको पहचान लेना चाहिये,वे हैं—दुःख और आनन्द। एक अनुभूत मानसिक संघर्षणकी याद कराता है, और दूसरा सबके अन्तिम आदर्शकी प्रतीति कराता है।'

'तुम्हारा हृदय तुम्हारे सेवा-कार्योंकी जो कीमत आँकता है, उसके मुकाबले उन्हीं कार्योंकी जगत्‌द्वारा ठहराई हुई कीमत कुछ नहींके बराबर है।'

'बहुतेरे आदमी स्थलविशेषमें रहकर सेवा करनेमें सुख मानते हैं, और उस सेवाके लिये

वे समर्थ भी होते हैं। लेकिन किसी भी जगह पहुँचकर सेवा करनेमें कितनोंको सुख होता है? कितने यह शक्ति रखते हैं?'

'जिस तरह निर्जन वनमें सुन्दर फल पाये जाते हैं, उसी तरह आनबानके मौकेपर और जगहपर की गयी सेवा अत्यन्त सुन्दर मालूम होती है।'

'सर्वव्यापी अन्धकारमें जैसे एक नन्हा-सा दीपक भी उजेला-ही-उजेला कर छोड़ता है, उसी तरह स्वार्थसे भरेपूरे वायुमण्डलमें नन्हा-सा भी सेवाका काम निर्मल प्रकाश पहुँचाता है।'

'तुम्हारा वायुमण्डल जिस हदतक ख़राब हो, उसी हदतक उसे सेवाके कार्योंद्वारा सुधारकर सुन्दर बनानेकी आवश्यकता है।'

'अगर तुम अपनी वर्तमान परिस्थितिमेंसे सेवाके अवसर नहीं ढूंढ़ सकते, तो निश्चय मानो कि सेवाके लिये जैसी परिस्थिति तुम चाहते हो, वैसी परिस्थितिमें भी तुम सेवाके अवसर नहीं पा सकोगे। जो मनुष्य खुद तो दूसरोंकी बहुतेरी सेवाओंको स्वीकार कर लेता है मगर बदलेमें स्वयं एक भी सेवाका काम नहीं करता, उस मनुष्यके समान, स्वजनहीन और दुखी मनुष्य और कोई नहीं हो सकता।'

'स्थूल जगत्में सेवा, कार्यका रूप धारण करती है, आन्तरिक सृष्टिमें सहानुभूतिका स्वरूप लेती है, और मानसिक सृष्टिमें बोधरूपमें दर्शन देती है।'

'तुम्हारे जीवनके किसी भी दिनकी उज्ज्वलता-का श्रेय जितना सूर्यके प्रकाशको है, उतना ही सेवाके किसी कार्यके प्रकाशपर भी निर्भर है।'

'आतुरतासे और स्नेहसे कोई भी नन्हा-सा सेवाका काम सबेरे उठकर करना, उस दिनके तुम्हारे सुखके भण्डारको खुला रखनेका सर्वोत्तम उपाय है।'

'दयाके समान सेवा भी दो दिशाओंमें सुखका विस्तार करती है, वह सेवक और सेव्य दोनोंको सुखी बनाती है।'

'बाह्य जगत्में बसनेवाले ईश्वरी अंशकी सेवासे, अन्तस्तलमें विराजमान ईश्वरी अंशका ज्ञान प्राप्त होता है।'

'जो सेवाके कार्य हम स्वयं स्फूर्तिके कारण करते हैं, वही सच्ची सेवाके नमूने हैं। अपनी स्थिति और अपने आसपासके संयोगोंसे उत्पन्न होनेवाले कर्तव्यके अनुरूप सद्गुणोंका आचरण करना भी सेवा है। जैसे जो तुमसे ज्यादा बुद्धिमान्

हैं, अनुभवी हैं, उनके प्रति पूज्यभाव रखना और अपनेसे कम जाननेवालोंकी रक्षा करना, यह भी उनके प्रति तुम्हारे प्रेमका सच्चा लक्षण है।'

'कोई तो यह प्रेरणा पाकर सेवा करते हैं कि उसे देखकर जान-पहचानवाले उनकी प्रशंसा करेंगे, और कोई लोगोंको संकटग्रस्त देखकर–उनकी आवश्यकताका अनुभव करके सेवाके लिये दौड़ पड़ते हैं।'

'जिस तरह सुखके साथी मित्र होते हैं, उसी तरह सुखके दिनोंके सेवक भी होते हैं। तुम्हारी सेवा-वृत्ति कहाँतक निःस्वार्थ है, यह जाननेके लिये ज़रा अपना हृदय टटोल लेना।'

'कभी-कभी यह बात ध्यानमें रखना कठिन हो जाता है कि जिस मनुष्यके बहुतेरे मित्र हैं, उसकी अपेक्षा जो मित्रहीन है उसे हमारी मित्रता-

की अधिक आवश्यकता है। उसे मित्र नहीं मिलते, यही एक सबल कारण है कि हम उसके मित्र बनें।'

'जो लोग दूसरोंसे अच्छे व्यवहारकी आशा रखते हैं, वे अकसर ऐसे लोग होते हैं, जिन्हें स्वयं दूसरोंके साथ अच्छी तरह पेश आनेकी ज़रूरत है।'

'ग़लतफ़हमी पैदा किये बिना मित्रसे कुछ माँग लेनेमें सफल होना, निर्मल प्रेमका एक सच्चा लक्षण है।'

'परमेश्वर सेवाके सब कार्योंका हिसाब रखता है। लेकिन मनुष्य तो उसी कामका हिसाब रखता है, जिसे वह समझ सकता है और पसन्द करता है।'

'बहुतेरे मनुष्य रूढ़िके वश होकर सेवा करते हैं । हम प्रेमवश जगत्की सेवामें अपना जीवन बितावें ।'

'जब दूसरोंके दोप सुधारने लगो, तब पहले यह सोच लिया करो कि मानो वह दोष तुमने ही किया है ।'

'ऐसी कोई बात किसी आदमीके बारेमें मत कहो, जो उस मनुष्यके मुँहपर नहीं कह सकते ।'

'जो ज्ञान तुमको मनुष्य मनुष्यके भाईचारेकी ओर अधिकाधिक खींचता जाता है, वही ज्ञान संग्रहणीय है, प्राप्त करने योग्य है ।'

'अगर तुम्हारा हृदय औरोंसे अधिक प्रेम-पूर्ण है, और इसी कारण तुम दूसरोंकी अपेक्षा अधिक सेवा कर सकते हो, तो सचमुच तुम अधिक ज्ञानवान् हो; अन्यथा नहीं ।'

'जो सच्चे ज्ञानी हैं, उन्हें अपने ज्ञानका गर्व हो ही नहीं सकता, क्योंकि उन्हें अपने अज्ञानका पता रहता है।'

'अगर तुम कहींके अधिकारी बनाये गये हो, तो याद रक्खो कि अधिकारके कारण तुम्हारी खुशामद करनेवाले तो बहुतेरे मिल जायँगे, लेकिन लोगोंका प्रेम तुम अपने सद्गुणोंद्वारा ही पा सकोगे।'

'जब तुम किन्हीं अनजान—अपरिचित लोगोंके बीच जा पड़ो, तो उस समय उनका सद्भाव प्राप्त करनेकी चेष्टा करना—उपाय सोचना। भूलकर भी इस बातका विचार न करना कि तुम उन्हें अपनी महत्ताका परिचय किस तरह दे सकोगे। ईश्वरकी सच्ची पूजा उसकी सृष्टिकी सेवामें ही है।'

'अगर तुममें अपनी भूल स्वीकार करनेकी शक्ति होगी तो लोग खुशी-खुशी तुम्हारे सद्गुणों-की दाद देंगे।'

जब तुम्हें अपने वसीलेका, साधन-सम्पत्तिका अभिमान होने लगे, तब ज़रा देर ठहरकर सोच लेना कि यह वसीला तुम्हें अपने अधिकारके कारण प्राप्त है या सदाचारके प्रभावके कारण। हर-एक सत्तापूर्ण अधिकारपर आरूढ़ मनुष्यको एक-न-एक तरहका वसीला तो होता ही है।

'सदा इस बातका ख़याल रक्खो कि कहीं किसीपर मेहरबानी करते समय तुम अपने कर्तव्यसे विमुख तो नहीं हो रहे हो।'

'सच्ची भक्ति सेवा करनेमें है। विचारविशेष पर दृढ़ रहने—उसे पकड़े रखनेमें नहीं।'

'जिस कार्यका आरम्भ किया हो, उसकी प्रतिकूलताकी शिकायत करनेके बदले अगर तुम खुद उस कार्यके अनुकूल बनकर उसे आरम्भ करो तो अच्छा है।'

'सच्चे मननके फलस्वरूप सेवा करनेकी शक्ति अधिकाधिक बढ़ती जाती है और फिर अपनी उन्नतिके विचार बहुत कम सताते हैं।'

'जो लोग कहते हैं कि हमारी सेवाकी कोई ठीक-सी कदर नहीं करता, वे सच्ची सेवाके रहस्यको ही नहीं जानते।'

'इस बातका ध्यान रक्खो कि सेवा करनेके लिये दिये गये वचनोंके विस्तारकी अपेक्षा तुम्हारे प्रत्यक्ष सेवापूर्ण कामोंका विस्तार अधिक होता है।'

'जिस सेवा-कार्यके लिये तुमको कर्तव्य-विमुख होना पड़े, वह वास्तवमें सेवा-कार्य ही नहीं है।'

'संकटके समय वेसमझे-बूझे कुछ करनेकी अपेक्षा शान्तभावसे सहानुभूति रखना अधिक अच्छा है।'

'जो लोग यह सोचते हैं कि वे किसी भी प्रकारकी सेवा करनेके योग्य नहीं हैं, वे मालूम होता है, जानवरों और वनस्पतियोंको भूल जाते हैं।'

'जिन लोगोंको सेवा करनेकी फुरसत नहीं मिलती, वे ही लोग दूसरोंसे सेवा करानेके लिये बहुत कुछ समय पा जाते हैं।'

'किसी भी मनुष्यकी बात सुननेसे पहले उसके विषयमें अपनी राय कायम न करना, अपने ढंगकी एक अनूठी सेवा है।'

